सूरह — एक कहानी

सूरह अल-लैल

रात

पूरा सफ़र — दो देने वाले, दो रास्ते —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 92 • 21 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म

nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

वल्-लैलि इज़ा यग़्शा

1. क़सम है रात की जब वो ढाँप ले।

इन्न सअ्यकुम ल-शत्ता

4. बेशक तुम्हारी कोशिशें अलग अलग हैं।

फ़-अम्मा मन अअ्ता वत्तक़ा

5. तो जिसने दिया और तक़्वा इख़्तियार किया।

फ़-सनुयस्सिरुहू लिल्-युस्रा

7. तो हम उसे आसानी की तरफ़ आसान कर देंगे।

इल्लब्तिग़ा-अ वज्हि रब्बिहिल्-अअ्ला

20. सिर्फ़ अपने रब-ए-अअ्ला की रज़ा चाहते हुए।

व ल-सौफ़ यर्ज़ा

21. और अनक़रीब वो राज़ी हो जाएगा।

रात, दिन, और दो सिन्फ़

बेटा, यह सूरह तीन क़समों से शुरू होती है, और वो बड़े एहतियात से चुनी गई हैं: 'वल्-लैलि इज़ा यग़्शा — क़सम है रात की जब वो ढाँप ले — वन्-नहारि इज़ा तजल्ला — और दिन की जब वो रौशन हो कर सामने आए — व मा ख़लक़ज़्-ज़करा वल्-उंसा — और उसकी जिसने मर्द और औरत को पैदा किया।'

तरतीब देखिए, बेटा: तीन जोड़े, और तीनों में एक दूसरे के उलट। रात और दिन। मर्द और औरत। ढाँपना और ज़ाहिर करना। जिन चीज़ों की यहाँ क़सम खाई गई, वो सब दो दो हैं — एक दूसरे से मुख़्तलिफ़, और फिर भी दोनों ज़रूरी, और दोनों उसी एक हाथ की बनाई हुई।

और क्यों? क्योंकि वो अभी हमारे बारे में जो कहने वाले हैं, वो यही है: 'इन्न सअ्यकुम ल-शत्ता — बेशक तुम्हारी कोशिशें अलग अलग हैं, बिखरी हुई, मुख़्तलिफ़ सिम्तों में

जाती हुई।'

बेटा, इंसानियत पर नज़र डालिए और आपको इसकी सच्चाई नज़र आ जाएगी। हर शख़्स दौड़ रहा है — मगर हज़ार मुख़्तलिफ़ सिम्तों में। एक आदमी पैसे के लिए ख़ुद को थका रहा है, दूसरा शोहरत के लिए, तीसरा किसी औरत के लिए, चौथा बदले के लिए, पाँचवाँ अल्लाह के लिए। वही तवानाई, वही चौबीस घंटे, और मंज़िलें बिल्कुल अलग।

तो सूरह वही एक सवाल पूछती है जो असल में अहम है: जब हम सब वैसे भी दौड़ ही रहे हैं, तो इनमें से कौन सी सिम्त वाक़ई कहीं पहुँचती है?

दो क़िस्म के लोग, दो क़िस्म की आसानी

और अब, बेटा, अल्लाह पूरी इंसानियत को दो क़िस्मों में बाँट देते हैं — और यह तक़सीम वो उनके हाथों और उनके दिलों को देख कर करते हैं:

'फ़-अम्मा मन अ'ता वत्तक़ा — तो जिसने दिया और अल्लाह से डरा — व सद्दक़ बिल्-हुस्ना — और बेहतरीन (बदले) को सचा माना — फ़-सनुयस्सिरुहू लिल्-युस्रा — हम उसे आसानी की तरफ़ आसान कर देंगे।'

तीन ख़ूबियाँ, बेटा, और वो एक ख़ास तरतीब में हैं। उसने दिया — उसका हाथ खुला। उसके पास तक़्वा है — उसका देना दिखावे के लिए नहीं, और हलाल कमाई से है। और उसने अल-हुस्ना को सचा माना — उसे यक़ीन है कि कुछ बेहतर इंतिज़ार कर रहा है; वो अभी का यक़ीनी रुपया एक अन-देखे अज्र के बदले दे रहा है, और वो उस वादे पर इतना भरोसा करता है कि अमल कर गुज़रता है।

और अज्र: 'हम उसे आसानी की तरफ़ आसान कर देंगे।' बेटा, यह रूह की दुनिया का वो क़ानून है जिसे आप अपनी ज़िंदगी में ख़ुद जाँच सकते हैं: इताअत अगली इताअत को आसान बना देती है। जो शख़्स देता है, उसे अगली बार देना ज़्यादा आसान लगता है। जो एक बार फ़ज्र पढ़ लेता है, उसे दूसरी सुबह कम भारी लगती है। अल्लाह उस शख़्स के लिए रास्ता हमवार कर देते हैं जो पहले से उस पर चल रहा हो।

'व अम्मा मन बख़िल वस्तग़ना — और जिसने बुख़्ल किया और ख़ुद को बे-नियाज़ समझा — व कज़्ज़ब बिल्-हुस्ना — और बेहतरीन बदले को झुठलाया — फ़-सनुयस्सिरुहू लिल्-'उस्रा — हम उसे तंगी की तरफ़ आसान कर देंगे।'

बेटा, इस ख़ौफ़नाक तवाज़ुन को महसूस कीजिए: 'सनुयस्सिरुहू लिल्-'उस्रा' — हम उसके लिए मुश्किल को आसान कर देंगे। नीचे की तरफ़ जाने वाला रास्ता भी चिकना होता जाता है। पहला झूट मुश्किल होता है; सौवाँ बिल्कुल आसान। पहली छूटी हुई नमाज़ चुभती है; एक साल बाद कुछ भी नहीं। गुनाह ख़ुद अपनी रुकावट हटा देता है।

तो ये दो आयतें एक क़ानून सिखा रही हैं, बेटा: जिस सिम्त में आप पहले क़दम रख दें, अल्लाह उसी रास्ते को आपके लिए हमवार कर देते हैं। आदतों के बारे में यही बात सबसे ज़्यादा हौसला-अफ़ज़ा भी है और सबसे ज़्यादा डरा देने वाली भी।

और दूसरे आदमी की तीन ख़ूबियाँ देखिए, जो पहले वाले का आईना हैं: उसने रोका — मुट्ठी बंद हो गई; 'इस्तग़ना' — उसने ख़ुद को बे-नियाज़ समझा, यानी उसे यह एहसास ही नहीं कि उसे अल्लाह की ज़रूरत है; और उसने अल-हुस्ना को झुठलाया — उसे वाक़ई यक़ीन ही नहीं कि कुछ बेहतर आने वाला है, तो फिर आगे भेजे ही क्यों?

'व मा युग़्नी 'अन्हु मालुहू इज़ा तरद्दा — और उसका माल उसके किस काम आएगा जब वो गिरेगा?' 'तरद्दा', बेटा — जब वो लुढ़क कर गिर जाएगा, क़ब्र में, तबाही में। वो माल जिसे वो मुट्ठी में दाबे हुए था, एक हाथ तक नहीं बढ़ाएगा।

हिदायत हमारे ज़िम्मे, और आग से आगाह कर दिया

'इन्ना 'अलैना लल्-हुदा — बेशक हमारे ज़िम्मे हिदायत है।' बेटा, अल्लाह ने रास्ता दिखाना ख़ुद अपने ऊपर लिया — रसूलों के ज़रिए, इस किताब के ज़रिए, और हर सीने में रखी हुई फ़ितरत के ज़रिए। कोई यह शिकायत नहीं कर सकता कि नक़्शा रोक लिया गया था।

'व इन्ना लना लल्-आख़िरत वल्-ऊला — और बेशक आख़िरत और दुनिया दोनों

हमारी हैं।' दोनों जहान उन्हीं की मिल्कियत हैं — तो जिस आदमी ने सिर्फ़ पहले के पीछे दौड़ लगाई, वो भी उस चीज़ के पीछे दौड़ रहा था जो वैसे भी अल्लाह ही की थी।

'फ़-अन्ज़र्तुकुम नारन तलज़्ज़ा — तो मैंने तुम्हें उस आग से डरा दिया जो भड़कती है — ला यस्लाहा इल्लल्-अश्क़ा — उसमें वही जलेगा जो सबसे बद-बख़्त है — अल्लज़ी कज़्ज़ब व तवल्ला — जिसने झुठलाया और मुँह फेरा।'

बेटा, लफ़्ज़ 'अन्ज़र्तुकुम' में छुपी रहमत देखिए — मैंने तुम्हें आगाह कर दिया। तंबीह एक मेहरबानी है; यह पहले दी जाती है, बाद में नहीं। आग का बयान कर दिया गया, उसकी तपिश का एलान कर दिया गया, रास्ते पर निशान लगा दिए गए — सब पहले से, ताकि कोई वहाँ हैरान हो कर न पहुँचे।

वो आदमी जिसने ख़ुद को पाक करने के लिए दिया

और फिर सूरह उस शख़्स का बयान करती है जो उस आग से दूर रखा जाएगा — और बेटा, इन आयतों के पीछे एक ख़ूबसूरत वाक़िआ है:

'व सयुजन्नबुहल्-अत्क़ा — और उस सबसे मुत्तक़ी शख़्स को उससे दूर रखा जाएगा — अल्लज़ी युʼती मालहू यतज़क्का — जो अपना माल देता है ताकि ख़ुद को पाक करे।'

'व मा लि-अहदिन 'इंदहू मिन निʼमतिन तुज्ज़ा — और किसी का उस पर कोई एहसान नहीं जिसका बदला देना हो — इल्लब्तिग़ा-अ वज्हि रब्बिहिल्-आʼला — बल्कि सिर्फ़ अपने रब-ए-आʼला की रज़ा चाहते हुए — व ल-सौफ़ यर्ज़ा — और अनक़रीब वो राज़ी हो जाएगा।'

बेटा, मुफ़स्सिरीन ज़िक्र करते हैं कि ये आयतें अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि0) के बारे में नाज़िल हुईं। वो उन कमज़ोर और अज़ाब दिए जाने वाले ग़ुलामों को ख़रीदते थे जिन्होंने इस्लाम क़ुबूल किया था — उनमें बिलाल (रज़ि0) भी थे — और उन्हें आज़ाद कर देते थे। बिलाल (रज़ि0) को जलती हुई रेत पर घसीटा जाता था, सीने पर पत्थर रख दिया जाता था, और वो सिर्फ़ इतना कहते थे: 'अहद, अहद' — एक, एक। अबू बक्र

(रज़ि0) ने उन्हें ख़रीद कर आज़ाद कर दिया।

और लोगों ने कहा: ये किसी एहसान के बदले कर रहे हैं, किसी फ़ायदे के लिए, मर्तबे के लिए। तो अल्लाह ने नाज़िल फ़रमाया: ये किसी का एहसान नहीं चुका रहा — ये सिर्फ़ अपने रब-ए-आ'ला की रज़ा के सिवा कुछ नहीं चाहता।

बेटा, अल्लाह ने उसकी नीयत के लिए जो तरकीब इस्तेमाल की वो देखिए: 'इब्तिग़ा-अ वज्हि रब्बिहिल्-आ'ला' — अपने रब का चेहरा चाहते हुए। जन्नत नहीं माँग रहा, अज्र भी नहीं माँग रहा — उसे चाहता है। यह वो बुलंद तरीन नीयत है जो कोई इंसान रख सकता है।

और फिर वो वादा, अरबी में चार लफ़्ज़, और क़ुरआन के सबसे ख़ूबसूरत जुमलों में से: 'व ल-सौफ़ यर्ज़ा — और अनक़रीब वो राज़ी हो जाएगा।'

बेटा, अल्लाह यह नहीं बताते कि वो उसे क्या देंगे। वो बस इतना फ़रमाते हैं: वो मुतमइन हो जाएगा। उस शख़्स को राज़ी करने के लिए जितना चाहिए — उतना दिया जाएगा, और उससे ज़्यादा। यह वो वादा है जो आप उससे करते हैं जिसे आप चाहते हैं: तफ़सीलात की फ़िक्र मत करो; तुम ख़ुश होगे।

तो वो सूरह जो रात और दिन से शुरू हुई थी, एक ऐसे आदमी पर ख़त्म होती है जो अँधेरे में अपना माल दे रहा है, किसी से कुछ तवक़्क़ो नहीं रख रहा — और अल्लाह पूरी दुनिया को, हमेशा के लिए, एलान कर रहे हैं कि यह शख़्स राज़ी हो जाएगा।

इस सूरह से क्या सीखा

1. हर शख़्स मेहनत कर रहा है; सवाल सिर्फ़ सिम्त का है — 'इन्न स'यकुम ल-शत्ता'।

2. तीन चीज़ें आसान रास्ता खोलती हैं: खुला हाथ, तक़्वा, और यह सचा यक़ीन कि कुछ बेहतर आ रहा है।

3. इताअत इताअत को आसान करती है — और गुनाह ख़ुद अपनी रुकावट हटा देता है। पहले क़दमों की हिफ़ाज़त कीजिए।

4. 'इस्तिग़्ना' — अल्लाह से बे-नियाज़ी का एहसास — बुख़्ल की जड़ है।

5. तंबीह रहमत है: आग का बयान पहले कर दिया गया, ताकि कोई हैरान हो कर वहाँ न पहुँचे।

6. बग़ैर एहसान चुकाए और बग़ैर बदले की उम्मीद के दीजिए — सिर्फ़ 'अपने रब-ए-आ'ला का चेहरा' चाहिए।

7. उस चार-लफ़्ज़ी वादे का निशाना रखिए: 'व ल-सौफ़ यर्ज़ा' — और वो ख़ूब राज़ी हो जाएगा।

या अल्लाह, हमारे हाथ खोल दीजिए, हमें आसानी की तरफ़ आसान फ़रमाइए, और हमें अपनी रज़ा के सिवा कुछ न चाहने वाला बना दीजिए। आमीन।